३. क्षेत्र : आवास

३.१ मिट्टी के कार्य

नाटिका : मिट्टी का महत्त्व

(स्थान – मैदान रमेश, संतोष और भारती मैदान में खेल रहे हैं ।)

रमेश : अरे संतोष ! हमें मिट्टी में वर्णमाला लिखना तो सिखाया है, अब इसी पद्धति से मिट्टी में फूलों और प्राणियों के चित्र बनाएँ क्या ?

संतोष : रमेश, भारती... आओ, हम सब लोग चित्र बनाएँगे ।

भारती : अरे लेकिन, चित्र गलत हो गया तो ?

रमेश : बहुत आसान है । मिट्टी में वह तुरंत मिटाया जा सकता है ।

भारती : अरे हाँ ! कितना मस्त है ! मिट्टी में हम अंग्रेजी नाम और स्पेलिंग भी लिख सकते हैं ।

संतोष : अरे ! इस वर्ष तो मैं मिट्टी की मूर्ति बनाने वाला हूँ ।

भारती : तू मिट्टी कहाँ से लाएगा ?

संतोष : हमारे खेत से ! हमारे खेत में अच्छी काली मिट्टी है । इसीलिए तो साग– सब्जी और चावल की फसलें भी खूब आती हैं ।

रमेश : भारती, तुझे वह चट्टान दिखाई दे रही है क्या ? क्या उसपर कुछ उगा है ?

भारती : कुछ भी नहीं ।

रमेश : ऐसा क्यों हुआ होगा ? क्योंकि वहाँ जरा भी मिट्‌टी नहीं है ।

(उसी समय सचिन सर आते हैं ।)

सर : अरे, मिट्‌टी में क्या कर रहे हो ?

संतोष : सर, आपने हमें वर्ण लिखना सिखाया है, उसी पद्‌धति से हम मिट्‌टी में चित्र बना रहे हैं ।

भारती : सर.... हमें मिट्‌टी में खेलना बहुत भाता है ।

सर : अरे! हम जो अन्न खाते हैं, वह मिट्‌टी के कारण ही तो उगता है । यदि मिट्‌टी न होती तो अनाज उगा ही नहीं होता । है कि नहीं ?

रमेश : सर, मिट्‌टी के हमपर बहुत उपकार हैं ! क्योंकि मिट्‌टी के कारण ही हमें अनाज, फल, फूल मिलते हैं ।

सर : हाँ, बिलकुल सही है ! अरे, यही क्यों । आस-पास के मकान देखो, घरों की दीवारें देखो । वे भी मिट्‌टी की ही बनी हैं । दीवार के लिए जिन ईंटों का उपयोग किया गया, वे भी मिट्‌टी की ही हैं । इसलिए इस मिट्‌टी का संरक्षण करना ही चाहिए । यह मिट्‌टी बह नहीं जानी चाहिए।

रमेश : सच में सर ! कितनी उपयोगी है यह मिट्‌टी । उसकी रक्षा के लिए हम क्या कर सकते हैं ?

सर : इसके लिए हम पेड़ लगाएँ, छोटे-छोटे बाँधों का निर्माण करें ; जिससे मिट्‌टी का कटाव नहीं हो पाएगा । पहली बारिश में मिट्‌टी की सुगंध बहुत अच्छी आती है जो मुझे खूब पसंद है ।

संतोष : मिट्‌टी फूलों में सुगंध भरती है, फूलों को रंग प्रदान करती है ।

भारती : सर, आज से हम मिट्‌टी के मित्र हैं ! उसका महत्व हमें आज पता चला है ।

संतोष : सर, आपने मिट्‌टी का महत्व हमें समझा दिया है । यही महत्व हम अपने सभी मित्रों को बताएँगे ।

सर : तो फिर चलो !

आओ अब मिट्‌टी का संवर्धन करें । कारण वह तो अपनी माता है ।

मेरी कृति :

गीली मिट्‌टी से विविध प्रतिकृतियाँ बनाकर उन्हें रँगो। (जैसे-मिट्‌टी के बरतन, प्राणी,पक्षी)

- 'मिट्‌टी के महत्व' पर नाटिका तैयार करके उसका प्रस्तुतीकरण करवा लें ।
- परिसर के मिट्‌टी के कारीगर से प्रत्यक्ष मिलकर उनके साथ बातचीत की योजना बनाएँ । यहाँ मिट्‌टी के बरतनों का निरीक्षण करने के लिए कहें ।

३.२ बाँस और बेंत कार्य

बाँस और बेंत कार्य के लिए लगने वाली सामग्री और साधन

कत्ता – बाँस तोड़ना, काटना, बाँस की कामचियाँ (छोटी-छोटी पट्टियाँ) बनाना ।

छुरी / चाकू – पतली -पतली कमचियाँ तैयार करना, कमचियों को तराशना, कमचियाँ काटना, कमचियाँ तोड़-तोड़कर उनके छोटे-छोटे टुकड़े बनाना ।

कैंची - कमचियाँ के सिरे काटना, बाँस की कमचियों के सिरे काटना।

हैक्सा (आरी) - बाँस काटना, कमचियाँ काटना ।

मेजर टेप – वस्तु की नाप लेना ।

सुआ – कमचियों में छेद करना, कमचियाँ खोंसना ।

बालटी – बाँस कार्य के लिए आवश्यक पानी रखने हेतु ।

काठ की हथौड़ी – बाँस से बनाई वस्तुओं के किनारे ठोंककर मजबूत करने के लिए ।

पॉलिश पेपर – बाँस की कमचियों को घिसकर चिकना करने हेतु।

पतीली – बाँस की कमचियों को रँगते समय रंग घोलने के लिए ।

कत्ता

छुरी/चाकू

हैक्सा (आरी)

काठ की हथौड़ी

टोचा / सुआ

मेजर टेप

पतीली

मेरी कृति : परिसर के बाँस कारीगरों से प्रत्यक्ष मिलकर इन साधनों का उपयोग किस प्रकार किया जाता है; उसका निरीक्षण करो ।

◆ बाँस केंद्र द्‌वारा आयोजित प्रदर्शनी की सैर की योजना बनाएँ ।

३.३ फूल पौधे और शोभायमान पेड़ लगाना

पत्तों और फूलों की रचना

सामग्री : विविध प्रकार के फूल, पत्ते, सुई-धागा आदि ।

कृतिक्रम :

(१) तरह-तरह के पत्ते और फूल इकट्ठे कर समाचारपत्र के कागज पर फैलाओ ।

(२) अपनी पसंद के अनुसार आकर्षक रचना कर सजावट करो ।

मेरी कृति : जन्मदिन, विद्‌यालय के विविध कार्यक्रमों के अवसरों पर आकर्षक पुष्परचना करो ।

- विविध कार्यक्रमों में समूह कार्य के अंतर्गत सजावट करवा लें । संभव हो तो ; सजावट तथा आकर्षक रचनाओं की फिल्में भी दिखाएँ ।